तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मूलसूत्र

हितोपदेशी वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

सर्वज्ञ प्रयोजन - भावना

मतिज्ञान के क्रम के भेद

अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥

अर्थ - [अवग्रह ईहा अवाय धारणाः] अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा, यह चार भेद हैं।

अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ

बहुबहुविधक्षिप्रानिःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ॥ १६ ॥

अर्थ – [अवग्रह ईहा अवाय धारणाः] अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा, यह चार भेद हैं। [बहु] बहुत [बहुविध] बहुत प्रकार [क्षिप्र] जल्दी [अनिःसृत] अनिःसृत [अनुक्त] अनुक्त [ध्रुवाणां] ध्रुव [सेतराणां] उनसे उल्टे भेदों से युक्त अर्थात् एक, एकविध, अक्षिप्र, निःसृत, उक्त, और अध्रुव; इस प्रकार बारह प्रकार के पदार्थों का अवग्रह ईहादिरूप ज्ञान होता है।

बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ।।१६ ।। - अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ

अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ	अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ
बहु	एक
बहुविध	एकविध
क्षिप्र	अक्षिप्र
अनि:सृत	नि:सृत
अनुक्त	उक्त
ध्रुव	अध्रुव

बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ॥ १६ ॥ - बहु-एक का स्वरूप

(१) **बहु** - एक ही साथ बहुत से पदार्थों का अथवा बहुत से समूहों का अवग्रहादि होना, (जैसे लोगों के झुण्ड का अथवा गेहूँ के ढेर का) बहुत से पदार्थों का ज्ञानगोचर होना।

(२) **एक** - अल्प अथवा एक पदार्थ का ज्ञान होना, (जैसे - एक मनुष्य का अथवा पानी के प्याले का) थोड़े पदार्थों का ज्ञानगोचर होना।

बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ॥ १६ ॥ - बहुविध-एकविध का स्वरूप

(३) **बहुविध** – कई प्रकार के पदार्थों का अवग्रहादि ज्ञान होना, (जैसे कुत्ते के साथ का मनुष्य अथवा गेहूँ, चना, चावल इत्यादि अनेक प्रकार के पदार्थ), युगपत् बहुत प्रकार के पदार्थों का ज्ञानगोचर होना।

(४) **एकविध** – एक प्रकार के पदार्थों का ज्ञान होना, (जैसे एक प्रकार के गेहूँ का ज्ञान), एक प्रकार के पदार्थ का ज्ञानगोचर होना।

बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ॥ १६ ॥ - क्षिप्र-अक्षिप्र का स्वरूप

(५) क्षिप्र - शीघ्रता से पदार्थ का ज्ञान होना।

(६) अक्षिप्र - किसी पदार्थ को धीरे-धीरे बहुत समय में जानना, अर्थात् चिरग्रहण।

बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ॥ १६ ॥ - अनि:सृत-नि:सृत का स्वरूप

(७) **अनि:सृत** – एक भाग के ज्ञान से सर्वभाग का ज्ञान होना, (जैसे पानी के बाहर निकली हुई सूंड को देखकर पानी में डूबे हुए पूरे हाथी का ज्ञान होना), एक भाग के अव्यक्त रहने पर भी ज्ञानगोचर होना।

(८) **नि:सृत** – बाहर निकले हुए प्रगट पदार्थ का ज्ञान होना, पूर्णव्यक्त पदार्थ का ज्ञानगोचर होना।

बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ॥ १६ ॥ - अनुक्त-उक्त का स्वरूप

(९) अनुक्त - (अकथित) जिस वस्तु का वर्णन नहीं किया, उसे जानना। जिसका वर्णन नहीं सुना है, फिर भी उस पदार्थ का ज्ञानगोचर होना।

(१०) उक्त - कथित पदार्थ का ज्ञान होना। वर्णन सुनने के बाद पदार्थ का ज्ञानगोचर होना।

बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ॥ १६ ॥ - ध्रुव-अध्रुव का स्वरूप

(११) ध्रुव – बहुत समय तक ज्ञान जैसा का तैसा बना रहना, अर्थात् दृढ़तावाला ज्ञान।

(१२) अध्रुव – प्रतिक्षण हीनाधिक होनेवाला ज्ञान, अर्थात् अस्थिरज्ञान।

अध्याय १: सूत्र १६ - अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ

बहुबहुविधक्षिप्रानिःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ।।१६ ।। - मतिज्ञान के भेदो की संख्या

अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ	मन एवं इन्द्रियाँ	मतिज्ञान का क्रम	कुल भेद
बहु-एक	स्पर्श	अवग्रह	
बहुविध-एकविध	रस	ईहा	
क्षिप्र-अक्षिप्र	गन्ध	अवाय	
अनिःसृत-निःसृत	वर्ण	धारणा	
अनुक्त-उक्त	श्रोत्र		
ध्रुव-अध्रुव	मन		
१२	६	४	२८८

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र १६

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --	९	१
कौन से ज्ञान प्रमाण है ?	१०	१
परोक्ष एवं प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद	११-१२	२
मतिज्ञान के दूसरे नाम	१३	१
मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त -	१४	१
मतिज्ञान के क्रम के भेद तथा उनका स्वरूप	१५-१९	५
श्रुतज्ञान का वर्णन, उत्पत्ति का क्रम तथा उसके भेद	२०	१

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र १७-१९

उपरोक्त अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थभेद किसके हैं ?

अर्थस्य ॥ १७ ॥

अर्थ - उपरोक्त बारह अथवा २८८ भेद (अर्थस्य) पदार्थ के (द्रव्य के-वस्तु के) हैं।

अवग्रह ज्ञान में विशेषता

व्यञ्जनस्यावग्रहः ॥ १८ ॥

अर्थ - [व्यञ्जनस्य] अप्रगटरूप शब्दादि पदार्थों का [अवग्रहः] मात्र अवग्रह ज्ञान होता है, ईहादि तीन ज्ञान नहीं होते।

अवग्रह ज्ञान में विशेषता

न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ॥ १९ ॥

अर्थ - व्यञ्जनावग्रह [चक्षुः अनिन्द्रिया याम्] नेत्र और मन से [न] नहीं होता।

अवग्रह ज्ञान में विशेषता

- अवग्रह
  - व्यंजनावग्रह
    - अव्यक्त ज्ञान
    - मात्र स्पर्श , रस , गन्ध , श्रोत्र इन्द्रिय के द्वारा
    - १ अवग्रह x ४ इन्द्रिय x १२ पदार्थ = ४८ भेद
  - अर्थावग्रह
    - व्यक्त ज्ञान
    - मन ओर ५ इन्द्रिय के द्वारा
    - ४ अवग्रहादि x ६ मन-इन्द्रिय x १२ पदार्थ = २८८ भेद

अध्याय १: सूत्र १३-१९ मतिज्ञान के स्वरूप का सार

- व्यंजनावग्रह → अव्यक्त ज्ञान
- अर्थावग्रह → व्यक्त ज्ञान
- ईहा → अधिक जानने की इच्छा
- अवाय → निश्चय अथवा निर्णय
- धारणा → स्मरण

विशुद्धता की वृद्धि

अध्याय १: सूत्र १३-१९ मतिज्ञान के स्वरूप का सार

दर्शनोपयोग → मति -- मनन -- [व्यंजनावग्रह → अर्थावग्रह → ईहा → अवाय → धारणा]

स्मृति -- स्मरण -- धारणा अनिवार्य

संज्ञा -- जोडरूप ज्ञान -- प्रत्यभिज्ञान

चिंता -- व्याप्ति ज्ञान -- तर्क

अभिनिबोध -- अनुमान ज्ञान

[१] तत्त्वार्थमणिप्रदीप , प्रथम संस्करण , डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

जिनवाणी स्तुति